

विद्ययां अमो जानतो है हमरे जो भाई हैक्यौंकि यह तो ज्ञान हैवस्तव मैं हम सभी भाई2 हैं। आहमारे अपने घर जावेगी। अपनी रुग्नी यर की याद रहती है। अहमारे ही घर जावेगी। शरीर तो नहीं जावेगी। बह है अहमारों को दुनिया। वच्चों को भालूम है हम घर जाने वाले हैं। 84 का चक्र पूरा हुआ। यह वैहद के इमाम का चक्र फिरता ही रहता है। और कोई को भालूम नहीं है कि यह इमाम है। और कोई को भालूम नहीं है कि यह इमाम है। तो तुम वच्चों की बुधि मैं यह याद रहनी चाहेस। किसको समझाना भी चाहेस। यह भी वच्चों को भालूम हुआ हमने 84 जन्म हिये हैं। 84 लख कहने से नीं जैसे समझ से बाहर चले जाते हैं। बाप को भूल जाने से जैसे यह दैसमंड बन पड़े हैं। बाप को तो कब भूलना न चाहिश। जो 84 जन्मों का वरसा देते हैं। तुम अभी कहेंगेवरोवर हम बाप को भूल गये हैं। अभी बाप खुद बैठ सिखाते हैं। श्रीमत घर राजाओं का राजा तुम बनते हो। टीचर पढ़ते हैं। तुम पढ़कर राजा बन जाते हो। पिर जितना मैहनत करेंगे अपन की सजाई का ललक देते हो। गाड ने पढ़ाकर गाड-गौडेस बनाया है। जो भी भास्तवासी हैं ल०ना० को भगदान भगवती कह देते हैं। तो भगदान और भगदाति यह कितना ऊंच पद है। अभी तुमको यही ताकत है। तुम इट समझेंगे यह तो कल्प2 बनते हैं। पढ़ने वाला है भगवान। कृष्ण नहीं है। अभी भालूम हुआ है। यह सम्पूर्ण पवित्र है। इन्हों की महिमा गाई जाती है। अपनी आसुरी गुण उन्हों के आगे वर्णन करते हैं। 84 लख सुना है तो अभी 84 जन्मों की बात बुधि मैं नहीं बैठती। तो बाप बैठ समझते हैं। यह है श्री श्री श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भत। टीचर भत देते हैं ना। उन सभी को भतदेने वाले हैं। उनको तो भत देने वाला कोई है नहीं। आगे पता न था हु इज हू। अभी इट धूष मैं आ जावेगा। जो जानते हैं वही बतावेगे। यहां भास्तव मैं जब द्वैटश गवर्मेंट्यों तो कितना लूटा। नहीं तो भास्त जितना माहुकार था। निजाम का कितना नाम गँशहुर है। वह सभी हैं मनुष्यों की माहुकारो। निजाम को 500 रानियां थी। (हिन्दी) अभी तुमको बाप समझते हैं हृ इन हू। अर्थात मैं कौन हूं दुनिया मैं कोई नहीं जानते हैं। हजार सूर्यों से तेजोभय कोई है नहीं। यह सभीसुनीं सुनाई बातें हैं। शास्त्रों मैं लिखा हुआ है ना तो वह बुधि मैं रहता है भगदान बहुत तेजोभय होगा। पढ़ा है सुना है तो समझते हैं हमको सा० हो। तो कृष्ण जो बैठ याद करते हमकोदीदार हो। अछां हो भी जाता है दीदार पिर प्राप्ति क्या। दीदार हुआ पिर क्या। फ़खदा क्या होगा। बाप समझते हैं सा० से कोई फ़खदा नहीं। यह बातें तो बहुत ही समझने की हैं। बाप से वरसा लेना तोमैकड़ का काम है। वैहद का एक ही बाप शिव वाला है। सभी कहते भी हैं हम भाई2 हैं। जिचीनी हिन्दु भाई2 भी समझते नहीं हैं। अभी बाप बैठ समझते हैं मैं तुम वच्चों को वैहद का बाप हूं। तुम बैठन्य अहमारे होक्षभाई भाई। तुम जानते हो इस अभय हम टन्सफर होते हैं। तमैष्यधान से अभी सतौष्यधान बनते हो यह पढ़ाई है ना। वह जिएकाने पढ़ाई कितने पढ़ते हैं। यह है बाप की रुग्नी पढ़ाई जो एक ही बार तुम ही पढ़ते हो। अभी स्त्रीचुअल कान्पेस जक्षर कहते हैं परन्तु अर्थ का कुछ भी पता नहीं है। रुग्नी नालैज किसके पास है जानते नहीं हैं। हमरे पास तो सहे शास्त्रों की नालैज है। बाप समझते हैं मीठे० वच्चों रुग्नी स्त्रीचुअल नालैज तोबापदस्ता ही मिलती है। इस समय तुम अहमारों को बाप से नालैज मिलती हैं। पिर 5000 रुपय बाकद चक्र सिपीट होना है। तमैष्यधान से सतौष्यधान बानि लियेयोग सिखाया जाता है। बाप बैठ समझते हैं तुम अहमारे भाई2 हो। अभी मैं तुम्हारा बाप हूं। तुम्हकी सूष्टि का चक्र स जाता हूं। 84 का चक्र पूरा होगा पिर तुम्हारा ज्ञान बन्द ही जावेगा। पिर एक नम्बर से शुरू होगा। इस पढ़ाई की तुम जानते हो। ब्राह्मणों विग्रह शुद्ध दुधि पढ़ा न सके। अभी तुम जानते हो हम सो ब्राह्मण सर्वोत्तम कुल हैं। पिर हम सो देवता बनेंगे। अभी हमको बाप पढ़ते हैं। ईश्वर की सन्तान हैं। ईश्वर को भी यहां आना पड़ता है। बाप जो कुछ समझते हैं, टाईम पास होता रहता है। इनको 5000 रुपय हुआ है चक्र शुरू हुआ है। पहले० सम्बत होगा फर्ट, फर्ट, फर्ट। बाप बैठ समझते हैं। पार्ट रिपीट पिर अहमारे करेंगे। जो जन्म जिस समय लिया है हूं वहू रिपीट होंगी। बाप

समझते हैं यह भी इमाम अनुसार वार्तालिप चलतरहता है। अभी स्मृति आती है। वरोबर ऐसा चक्र और किसके पास निकल न सके। एक्युएट कोई समझा न सके। तुम वच्चों की बुधि में नालैज है। अच्छा समझने वाला अच्छा समझदिगा। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी समझते हौ अहमा एक किंदी है। उनमें सरी नालैज की धरणा होती है। जूँ प्रसल चक्र प्रस्ता रहता है। देखने में कुछ भी नहीं आता है। इस राज् को दूसरा कोई अनुष्ठ नहीं जानते। तुम ही लक्षकी सितरे। जो भगवान आकर तुमको पढ़ाते हैं। वाप कहते हैं और मैं सारा ज्ञान भरा हुआ है। तुमको श्रेष्ठ मतदेते हैं। हीरे जैसा जन्म अभी वेस्ट मत करो। पढ़कर हीरे जैसा जन्म प्रेर से बनाओ। अच्छे ब्रेन कुपारियों की होती है। वाप कहते हैं वाप की जाना, अभी वाप की याद से हो अहमा सतोप्रधान बनेगी। इस समय दुःख है तब तो अनुष्ठ कहते हैं भगवान ने ऐसे क्यों बनाया। यह समझते नहीं सह तो अनादि बना हुआ इमामा है। सतयुग में कब मुख से ऐसे कहेंगे। वहां तो सुख ही सुख है। यहां तो घबड़ा जाते हैं। भाया का वर होने सेसभी भूल जाते हैं। कुछ देते इस दुनिया में तो दुख हो दुःख है। ब्रह्मसन्यासी जंगल में चले जाते हैं वहां भी कोई सुख थोड़ही है। तुम वच्चे बहुत सुख देखते हो। यह दुःख सुख का खेल है। इमामा का राज् कोई भी सन्यासी उदासी नहीं जानते। यह नया ज्ञान है इसलिये छोट 2 होती है। धोर 2 बुधि में आता रहेगा। तुम दु खु अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तो श्रीनंत पर चलना चाहिए ना। घदाई कोई हिमीक्ट नहीं है। परन्तु भाया वर कर लेती है। अभी तुम वच्चे समझते हो यह सूष्टि अनादि अवनिश्ची है। बुधि में सारा चक्र याद है। 5000 वर्ष की सूष्टि है। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तो बुधि में कुछ आता ही नहीं। अच्छा पीठै 2 रुहानी सिकीलधे कच्चों प्रितक्लानी वाप दादा का याद प्यार गुडनाईटद्वा। रुहानी वच्चों की रुहानी वाप का नपस्ते।

रात्रिक्लास 25-10-68:-

\*\*\*\*\* यह है ईश्वरीय नया परिवार इस विश्व पर, इस पुस्तकम संगम युग पर।

इसको कहेंगे ईश्वरीय परिवार। ईश्वर की वाप कहा जाता है ना। तो यह है ईश्वरीय परिवार। पिर तुम होते ही देवी परिवार। इनसे पहले थे आसुरी परिवार। जब आसुरी परिवार हैं तो इसके भैंट में ईश्वरीय परिवार भी है। वच्चे भी जानते हैं वरोबर हम ईश्वरीयपरिवार के हैं। ऊंच तै ऊंच है हमारा वाप ईश्वर। दीचर भी हृथिवर, सद गुरु भी ईश्वर। तो ईश्वरीय परिवार हुये हुना। ईश्वरीय परिवार जानते हैं ऊंच तै ऊंच का यह ईश्वरीय गुप्त परिवार है। तुम हीजानते हो और कोई नहीं जानते हैं। ईश्वर के वच्चे वास्तव में हमसभी भाई 2 हैं। परन्तु यहां ईश्वर के साथ हो जो भाई बहन ठंहरे। ब्रह्मा के रहादेड वच्चे होने काण तुमको ब्रह्मण कहा जाता है। यह पावत्र रहते की युक्ति है। नाम ही है प्रजापता ब्रह्मा कुमारो। तै जश्व देह धारी है ना। पिर बदेही हो तो दिव बाबा के स्तुतान कहेंगे। पिर परिवार नहीं कहेंगे। स्तुतान हो जाए भाई भाई। हम अस्त्मायसभी भाई 2 हैं। वाप भी बैठा रहता है। वहां भाई भाई और वाप है। वाप समझा रहे हैं। यह समझानी तुमको कल्प 2 प्रियता है। वाप विगर और कोई दे न सके। भगवान ही आकर मुख से समझते हैं। तो ईश्वरीय परिवार को कितना अथाह खुशी होनी चाहिए। हम ईश्वरीय परिवार के हैं। वह तो सतयुग के गांस्क दोगे ना। ईश्वर सतयुग की स्थापना करते हैं। वच्चे जानते हैं हम ईश्वरीयपरिवार के हैं। देवी परिवार के वरने लिये पुस्तार्थ कर रहे हैं। रुहानी ज्ञान रुहानी वच्चों को सिदाय रुहानी वाप के कोई दे नहीं सकता है। यह नई दाते तुम सुनते हो। जब अन्दर में निश्चय होता है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। भविष्य में सतयुगी के देवीपरिवार के वर्तने। तो खुशी होनी चाहिए ना। मुक्ति के लिये भक्ति मार्ग के कितना मध्या मारते हैं। तुम वच्चे इस इड के पहले पहले शुरूआत में तुम जीवनमुक्ति में रहते हो। शुरूआत में थोड़े होते हैं। उनको स्तोप्रधान कहा जाता है। तुम सतोप्रधान थे। जानते हो अभी सभी तुमोप्रधान हैं। यह बाते दुनिया नहीं जानती। तुम भगवान के वच्चेहो ना। तुम वच्चे जानते हो हम ते पूरा 84 का चक्र लगाया है। कल्प पहले भी जिनको निश्चय हुआ है अभी भी हो रहा है। यह चक्र प्रियता रहता है। रिपीटेशन अक्षर अभी तुम सुन रहे हो। वाप पुस्तोतम मंगन

युग पर ही सुनाते हैं। वस। फिर कब भी 5000 बर्ष में कोई से यह नालैज स्थिता और रचना के आदि मध्य अन्त की नहीं सुनेंगे। नहीं सुनेंगे नहीं सुनेंगे। कदाचित नहीं सुनेंगे। यह है ही रहनी श्रीविदया और तुम जिसमानी विद्यया पढ़ते हो। अच्छा सतयुग में तो जस शिक्षा मिलती है। वहां जिसमानी शिक्षा मिलती है वा रहनी? सतयुग में जिसमानी नलैज मिलती है वा रहनी नलैज मिलती है? अक्षर ही दो पूछता हूँ। कृष्ण को वहां रहनी नलैज मिलती है वा जिसमानी नलैज मिलती है? रहनी बाप मिलाडी है इस सभ्य। जो रहनी शिक्षा देते हैं। फिर तो जिसमानी ही चलती है। रहनी सिंफ इस सभ्य चलती है। देवताओं को इस नलैज का पतानहीं है। सिंफ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। त जब कोई आकर ब्राह्मण बने तब सुने। बर्ण भी मुख्य है। जिनका चित्र भी भारत में है। सिंफ वहरांग बनाते हैं। बाप आकर कर्सेट करते हैं। इस सभ्य 10% इनकैट है। क्योंकि इरोलिजियस है। कितना भारत इनकैट है। कुछ भी नलैज नहीं। बाप को सब्ज कहा जाता है। पूछते हैं मैं जो सन्झाता हूँ विचार कर बताओ मैं राईट हूँ या नहीं। बाप राईट ही बताते हैं। राईट दुनिया स्थापन करते हैं।

वच्चे जानते हैं हम बिल्कुल अनराईटियस बन जाते हैं। फिर बाप आकर राईटियस बनाते हैं। राईटियस को कोई गवर्मेन्ट थोड़ी ही जानती है। शास्त्रों में तो ऐसे हा कहानी लिखा दी है। जो सभी है द्वृगसच्च की स्ती भी नहीं। भक्त लेग सुनेंगे तो कहेंगेयह तो हमरे लग्नशास्त्रों की निन्दा करते हैं। शास्त्रों को निन्दा बना रामचन्द्र की निन्दा। शास्त्रों की पृथ्वी को वह ज्ञान समझते हैं। बहुत शास्त्र जो पढ़ते हैं वह अर्थात् है। इस सभ्य कलियुग में सभी है तमोप्रधान। शास्त्र में भी है भगवानुवाच जो अपन जो ईश्वर कह पूजबाते हैं वह बड़े ही असुर हिरण्यकश्यप है। पढ़ते भी हैं परन्तु विश्वास थोड़ी ही करते हैं। दुनिया है अनराईटियस। राईटियस भी तो कितना सुख था। सतयुग में बड़े सुखी रहते हैं। इस सभ्य कितना दुःख है। गाते भी तो है सुख-दुख हस्त-ओर जीत का छेल है। परन्तु सुख कब, दुःख कब, हार कब जात कब यह सभी विगर ही कह देते हैं। आपें ही पूर्ण आपें ही पूजारी। बाप समझते हैं हम वच्चों को दुःखी नहीं करता हूँ। मैं तो राजयोग सिखालाकर चला जाता हूँ। वच्चे जानते हैं बाप इस कल्प के संगम युग पर ही आते हैं। नई दुनिया है की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश साधने छड़ा है। महाभारत लड़ाई कब लगी थी जवराजयोग सिखाया है। नई दुनिया में इनका राज्य होता है। तुम कहेंगे श्रीभक्त पर हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाप पढ़ते हैं यह निश्चय है तो खुशी में रहना चाहिए ना। कितना सहज सझने का है। मुझने की तो बात ही नहीं। फिर भी बाप कहते हैं कुछ भी बात हो तो पूछ सकते हो। नई को कलियुग पुरानी को कलियुग कहा जाता है। अभी तो सभी कहेंगे आयरनरेजेड शैदि वर्ल्ड। यहनलैज और किसको मिलती ही नहीं है। ब्राह्मणों को ही मिलती है। पैर/आर देवता के बीच में है बौद्ध ब्राह्मण। यह बाजाली है ना। इस नलैज को सिमरण कर सदैव हर्षित रहना चाहिए। कल्प कल्प ऐसे होता है अनम्बर पुरुषार्थ अनुसार डामा के पत्तेन अनुसार। फिर कल्प कल्प यही रेपीट होगा।

अच्छा बाप को याद करें तो दीचर को जस याद करें। दिन प्रति दिन तुम्हरी खुशी वृद्धि को पाती रहेंगी। इसी इन्हींहान में थोड़ा सभ्य रह गया है। कोलियुग अन्त और सतयुग के आदि का यह है पुरुषोत्तम संगम। जिस पर हो बाप आकर हम वच्चों को ज्ञान देते हैं। इस संगम युग पर ही बाप से वैह के सुख का वरसा मिलता है। तो अभी ऐसे बाप को याद मैं बैठो। जितना याद करें उतना ही विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जाओगे। अच्छार्हानी वच्चों को याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।